Patrika (Indore), 18th March 2022, Front Page-02

ज्यादातर पांच साल से कम उम्र के बच्चे होते है शिकार

आइआइटी के वैज्ञानिक तलाश रहे हैं संक्रामक मेनिन्जाइटिस का इलाज

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. मेनिन्जाइटिस जैसी गंभीर समस्या के निदान के लिए आइआइटी इंदौर ने महत्वपूर्ण रिचर्स की है। मेनिन्जाइटिस एक गंभीर संक्रमण है जो कि मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी के आसपास की सुरक्षात्मक परत को नुकसान पहुंचाता है। ज्यादातर पांच वर्ष तक के बच्चे इसके शिकार होते है। इनके अलावा कम प्रतिरोधक क्षमता वालों को भी इसकी चपेट में आने की आशंका बनी रहती है।

आइआइटी के बायो साइंस एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. अमित कुमार की अगुआई में नेहा जैन और उमा शंकर के सहयोग से की गई ये रिसर्च अमेरिकन कैमिकल सोसायटी जर्नल - एसीएस इन्फेक्शस डिजीज नामक जर्नल में प्रकाशित हुई है। प्रो. कुमार ने बताया, कुछ दशकों से, मेनिन्जाइटिस प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती बना हुआ है। यह रोग बैक्टीरिया या वायरस के कारण हो सकता है।

इसका प्रमुख कारण बैक्टीरियल इंफेक्शन है। ये नाक और गले में रहता है जो सर्दी से हवा में फैलकर दूसरे को भी चपेट में ला सकता है। मुख्यतः निसेरिया मेनिंगिटिडिस बैक्टीरिया से फैलता हैं जो कि कोरोना संक्रमण की तरह ही एक से दूसरे व्यक्ति तक हवा के जरिए पहुंचकर महामारी का कारण बन सकता है। इस रिसर्च के परिणाम घातक बैक्टीरिया के इलाज में मददगार है।

ये है मेनिन्जाइटिस के लक्षण

तेज बुखार या ठंड लगना, भ्रम की स्थिति महसूस होना, हाथ-पैर ठंडे पड़ना, मांसपेशियों में तेज दर्द होना, गर्दन में अकड़न आदि।

जल्द मिल सकेगा उपचार

रिसर्च टीम ने निसेरिया मेनिंगिटिडिस जीनोम का विश्लेषण किया और इन जी-क्वाड्रूप्लेक्स प्रारूप को विभिन्न आवश्यक जीनों में देखा जो होस्ट कोशिकाएं से अटैचमेंट, संक्रमण, जीनोम रखरखाव और प्रोटीन ट्रांसपोर्ट के लिए जरुरी हैं। इन पर कई प्रयोग में पता चला कि इन संरचनाओं को टारगेट करने से मेनिंगिटिडिस की वृद्धि कम हो जाती है। समूह अब ऐसे अणुओं की जांच कर रहा है जो इन संरचनाओं को लक्षित कर इन्हें इलाज के रूप में उपयोग किया जा सकता है।